

सङ्कलम्

- ① हिरण्यमेन पात्रेण सत्यस्थापिहितं मुखम् ।
तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये ॥

अर्थः - सोने के आवरण से सत्य का मुख ढका हुआ है। हे सूर्य सत्य और धर्म को देखने के लिए उस आवरण को हटा दे।

- ② अणोरणीयान् महतो महीयान्
आत्मास्य जन्तोर्निहितो ब्रह्मायाम् ।
तमक्रतुः पश्यति वीतशोके
धातुप्रसादान्महिमानमात्मनः ॥

अर्थः - सूक्ष्म से सूक्ष्म और बड़ा से बड़ा आत्मा इस हृदयरूपी गुफा में छिपा हुआ है। जिसे वश में नहीं किया जा सकता। परन्तु अपने इन्द्रियों के प्रभाव से शोक रहित होकर निष्काम रूप से उस परमात्मा को देख सकते हैं।

③ सत्यमेव जयते नानृतं

सत्येन पन्था विततो - देवयानः ।

येनाक्रमन्त्यृषयो ह्यत्प्रकामा

यत्र तत् सत्यस्य परं निधानम् ॥

अर्थ:- सत्य की ही विजय होती है। असत्य की नहीं।
सत्य के द्वारा देवलोक का मार्ग प्रशस्त होता है। मोक्ष को चाहने वाले ऋषि महर्षि उस सत्य को प्राप्त करते हैं। जहाँ सत्य का भण्डार होता है।

④ यथा मद्यः स्थन्दमानाः समुद्रे-

इस्तं प्रच्छन्ति नामरूपे विहाय ।

तथा विद्वान् नामरूपाद् विमुक्तः

परात्परं पुरुषमुपैति दिव्यम् ॥

अर्थ:- जिस प्रकार बहती हुई नदियाँ अपने नाम और रूप को त्याग कर समुद्र में मिल जाती हैं। ठीक उसी प्रकार विद्वान् पुरुष अपने नाम और रूप को त्याग कर परम दिव्य पुरुष में मिल जाते हैं।

⑤ वैदाहमेतं पुरुषं महान्तम्

आदित्यवर्णं तमसः परस्तात् ।

तमेव विदित्वाति मृत्युमेति ।

नान्यः पन्था विद्यतेऽयनायः ॥

अर्थ:- विद्वान् पुरुष अपने को अज्ञानी तथा दुखरे को जानी समझ कर इस मृत्युरूपी सागर को पार कर जाते हैं। क्योंकि वे जानते हैं कि इस संसार रूपी सागर को पार करने का कोई और दुसरा मार्ग नहीं है।